आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:31-12-14

अपनी श्रेष्ठ श्रीमत् से हम शूद्र आत्माओं को दैवी-देवता जैसा बनाने वाले, बेहद के बाप-टीचर-सतगुरु ने कहा, मीठे बच्चे - हद के संसार की वाहियात बातों में अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है, बुद्धि में सदा रॉयल ख्यालात चलते रहें.

इस कलियुग में रॉयल व्यक्ति उस को कहा जाता है जिसके पास बहुत धन है, बहुत बड़ा बैंक बेलेन्स होता है, बड़ा बंगला, नौकर-चाकर सब होते है. उस को देह-अभिमान भी बहुत स्ट्रौग होता हैं. यहाँ ईश्वरीय विश्व-विधालय में बाबा हम बच्चों को रॉयल चलन सिखलाते है वह है हमारा त्याग, तपस्या और वैराग्यता से भरा सम्पूर्ण सच्चाई-सादगी-स्वच्छता वाला ब्राह्मण जीवन. जैसे हमारी दादी कहती है – खीसा खाली पर बन रहे है विश्व के अधिकारी. कलियुग के धनवान लोगों को अपने पैसे का, पद का मिथ्या अभिमान रहता है. हम संगमयुग के ब्राह्मण आत्मा को भविष्य में, सतयुग में मिलने वाला श्रेष्ठ, ऊंच दैवी-देवता पद का रुहानी नशा रहता हैं. इस नशे के आधार पर ही ब्राह्मण आत्मा ये इस संगमयुग पर (जब की सारी सृष्टि घोर कलियुग के विकारों से त्रस्त है) अपना श्रेष्ठ पवित्र जीवन जीते है. इसलिए आज भी जो नये भाई-बहन पहली बार मधुबन आते है उनको कोई अलग ही दुनिया में आ गये हो ऐसा महसूस होता है. एक तरफ़ है घन-घोर कलियुग और दूसरी तरफ़ है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ संगमयुग. याद रहे की इस संगमयुग की महिमा सतयुग से भी ज्यादा है क्योंकि सारे कल्प में अभी ही आत्मा और परमात्मा का मेला लगता है. बाबा ने हमें इस समय की श्रेष्ठता को याद दिलाते हुए कहा की बच्चे, यह अमूल्य समय सारे कल्प में तुम्हें फिर नहीं मिलेगा. यह अमूल्य समय को वाहियात बातों में न बिता कर, एक बाप की याद में रहकर तुम्हारी आत्मा को दैवी-गुणों से भरना है. विचार करना है कि बाबा हम को क्या (शूद्र) से क्या (लक्ष्मी-नारायण जैसा दैवी-देवता) बना रहा है!

बाबा हमें हर रोज मुरलीओं से नयी-नयी श्रीमत् देते है. बाबा हमें जो श्रीमत् देते है उसको ऐक्युरेट धारण करने के लिए नीचे बताई हुई बातों को हमारे में चेक करना है.

१. <u>क्या हम अन्तर्मुखी है?</u> - कहा भी जाता है अन्तर्मुखी सदा सुखी. लेकिन हमें अपने में चेक करना है कि हम किसी भी झग-मुई, झर-मुई बातों में अपना टाइम तो वेस्ट नहीं करते है. स्व-चितंन और स्व-दर्शन में रहते है. हमें अपने मन को ऐसा ट्रेइन करना है की हमारी कर्मेन्दियां, आँखें और कान, भले वह बहार का देखे वा सूने पर हमारे अन्दर ग्रहण न हो. हमारा मन सदा स्व-चिंतन और स्व-दर्शन में रहे.

२. <u>अपना शो तो नहीं करते है?</u> - हमें खुद को चेक करना है की हम शो तो नहीं करते है. जब दूसरों के साथ व्यवहार में आते है तो खुद को बड़ा योगी, ज्ञानी होने का दिखावा तो नहीं करते है. चेक करें की मैं जो हुँ, जैसा हूँ वैसा ही दूसरों के सामने पेश आता हूँ.

३. <u>रुहानी नशे में रहते है?</u> - हमारा रुहानी नशा है कि हम गॉडली स्टूडेन्ट है. मनुष्य से दैवी-देवता बनने की पढ़ाई पढ़ रहे है. स्वयं परमात्मा आकर हमारा बाप, टीचर और सतगुरु बनता है. बाबा, बाप बनकर हमारी पालना करते है. टीचर बनकर हमें ईश्वरीय ज्ञान देते है. सतगुरु के रुप में वह हमें श्रेष्ठ बनने की श्रीमत् देते है, वरदानों से हमारी आत्मा का श्रृंगार करते है और फिर हमें अपने साथ भी ले जाते है.

४. <u>मिथ्या अहंकार तो नहीं है?</u> - कहा जाता है कि ज्ञानी आत्मा ये सभी विकारों पर विजय पाती है. लेकिन अन्त में अहंकार से हार जाते है. बाबा कहते है जैसे ही ज्ञानी आत्मा को यह मन में आया की "मैं तो कितना बड़ा ज्ञानी हूँ." - बस वही वह मर गया. हमें अपने में सदा चेक करते रहना है कि हमारे में रंज मात्र भी मिथ्या अहंकार तो नहीं है.

५. <u>अन्दर की बड़ी सफाई है?</u> - बाबा कहते है - सच ता विठो नच और सच कि नैया हिलेगी-डुलेगी पर डूबेगी नहीं. <u>इस यज्ञ में निर्विघ्न चलने के लिए सदा स्वयं से और एक बाप से सच्चा रहना हैं</u>. भक्ति में भी कहते थे कि भगवान से कुछ छिपता नहीं है तो अभी ज्ञान में वही साक्षात्कार भगवान मिले है तो उसे कैसे छिपायेंगे! जितना उसे छिपायेंगे खुद का ही नुकसान करेंगे. फिर दंड भी सो गुना भरना पड़ेगा. हमें सत्य शिव-बाप से कुछ भी छिपाना नहीं है.

६. एक बाप से ही हमारा लव है? - गीता में श्लोक भी है - नष्टों मोहा, स्मृति लब्धा माना जो आत्मा ये मोह का सम्पूर्ण त्याग करती है वही एक परमात्मा की याद में स्मृति स्वरूप रह सकती हैं. बाबा ने कहा है इस कलियुग में एक बाप से ही सच्चा रुहानी लव हो सकता है अन्य किसी भी आत्मा से देह का लव होगा, क्योंकि नाम ही देह को पड़ता है. चेक करो - कहते है की फलाना भाई या बहन ज्ञान में बहुत अच्छा या अच्छी है तो किस की तरफ़ हमारा आकर्षण होता है?

७. लूनपानी अर्थात खारेपन का संस्कार तो नहीं है? - हम अपने में चेक करें की मैं किसी से किसी भी बात में नाराज तो नहीं होता हूँ. किसी कि निंदा तो नहीं करता हूँ. अगर अभी भी मेरा यह संस्कार है किसी से किसी भी बात में लूनपानी होने का तो मैं ऊँच पद नहीं पा सकूंगा. इसलिए बाबा हमें सिखाता है सर्व की महिमा करो या कहे सर्व की विशेषताओं को देखो.

ॐ शांति.

Queries / Feedback to Atma Bhai on a.brahmin.soul@gmail.com.